शब्द–ब्रह्म
ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका
17 अगस्त 2014

गुजरात में प्रागैतिहासिक संस्कृति : एक अध्ययन

डा. कनैयालाल नायक
इतिहास और संस्कृति विभाग
संयोजक, महादेव देसाई ग्राम सेवा महाविद्यालय
सादरा, गूजरात विद्यापीठ, गांधी नगर
गुजरात, भारत

गुजरात की जमीन पर मानव का उद्भव या संचार हुआ और जब से मानव जीवन का विकास होने लगा तब से इस प्रक्रिया को विज्ञान की परिभाषा में संस्कृति कहते हैं। जिसमें मानवीय गतिविधियाँ जैसे बनी हुई वस्तुएँ, माल,.सामान कौशल्य, आदतें, विचार, मूल्य आदि की सामाजिक विरासत का समावेश किया जा सकता है। देश-विदेश की प्रजा की प्रमाणित जानकारी को इतिहास एवं संस्कृति माना जा सकता है। मानव संस्कृति के उद्भव काल में लेखन कला से परिचित नहीं था। अर्थात संस्कृति की शुरूआत के हजारों सालों का इतिहास अलिखित है। इसलिये संस्कृति के इस प्राक्.अक्षरज्ञान के नीर.अक्षरज्ञान के काल को प्रागैतिहासिक काल के नाम से जाना जाता है। प्रागैतिहासिक काल के उपलब्ध वर्णन को प्रागैतिहास कहा जाता है। किसी भी देश-प्रदेश की प्रजा का इतिहास समझने के लिये उसके प्रागैतिहासिक काल की जानकारी अत्यंत आवश्यक है।

ऐतिहासिक काल की तुलना में प्रागैतिहासिक काल बहुत लंबा है। लगभग ढ़ाई से पाँच लाख वर्ष और प्रागैतिहासिक काल का ज्यादातर हिस्सा पाषाण युग का है। पाषाण युग की संस्कृतियाँ प्रागैतिहासिक संस्कृतियों में गिनी जाती हैं। गुजरात में इसकी खोज सबसे पहले 1893 में रोबर्ट ब्रुस फूट नामक भूगर्भशास्त्री ने की थी। इस समय वे भारत सरकार से सेवानिवृत्त होकर बड़ौदा राज्य की सेवा में जुड़ गए थे। यहाँ वे राज्य की जमीन का आर्थिक आधार पर सर्वेक्षण करते थे। इस समय ही साबरमती नदी के पट में तालुका प्रांतिज के सादलिया गाँव के सामने अनोडिया.कोट एवं पेढ़ामली नामक स्थानों से हाथ से तराशे हुए पत्थर के औज़ार मिले। इसके बाद ई.सन् 1941 में फिर यहीं से इस प्रकार के औज़ार मिले। इसके बाद लांघणज नामक स्थल पर खुदाई की गई। इस प्रकार की प्रागैतिहासिक स्थलों की खोज 1949 तक चालू रही। सन् 1952, 1954, 1959 एवं 1963 में लांघणज में और खुदाई की गई। इसके बाद माही नदी की कंदराओं में भी इस प्रकार के औज़ार प्राप्त हुए। सौराष्ट्र दक्षिण गुजरात में वलसाड़ डांग तक एवं कच्छ में भी इस प्रकार के औज़ार प्राप्त हुए जो हाथों से बने हुए थे। अर्थात औज़ारों के निर्माण कौशल्य का विकास गुजरात में इस समय हो चुका था। सापेक्ष कालगणना की दृष्टि से देखा जाए तो ये मानव संस्कृति का सबसे पुरातन काल प्रतीत होता है। यह अनुमान लगाया जा सकता है कि इन औज़ारों को बनाने

वाला मानव गुजरात प्रदेश का ही आदिमानव होगा।

प्रारंभिक शोध में यह पता चला था कि आदिमानव सिर्फ उत्तर गुजरात में साबरमती नदी के किनारे ही बसता था। लेकिन आगे की शोध में यह पता चला कि साबरमती नदी की सहायक नदियाँ माही, संगकरजण और नर्मदा के किनारे तथा दक्षिण गुजरात में अंबिका सौराष्ट्र में भादर सूकी वगैरह नदियों के किनारों के प्रदेश में और कच्छ में भूखी नदी के प्रदेश में भी आदिमानव की बस्तियाँ थीं।

जलवायु एवं नदियाँ.

गुजरात के पाँच विभागों में भू.स्तर एवं जलवायु का अंतर उस समय भी था और वर्तमान में भी देखने को मिलता है। उत्तर गुजरात का समग्र प्रदेश मिट्टी वाला था। जिस कारण से 30.40 मीटर से अधिक नीचे की ओर नदी बहती थी और असंख्य खड्ड बनते रहे। इस कारण से साबरमती का नाम श्रभ्रवती अर्थात् खड्ड वाली जमीन हैं। इसी प्रकार से गुजरात की अन्य नदियों में यह देखने को मिलता है। ओरसंग और नर्मदा नदी की घाटियों में काली मिट्टी देखने में आती है।

दक्षिण गुजरात में डांग प्रदेश जंगल बाहुल्य क्षेत्र है। इस प्रदेश में अन्य विस्तारों की तुलना में बहुत ज्यादा वर्षा होती है। सौराष्ट्र में पठारी एवं सपाट जमीन देखने में आती है। प्राचीन काल में सौराष्ट्र का बहुत सारा भाग समुद्र के नीचे एवं कितना ही हिस्सा महाराष्ट्र की तरह ज्वालामुखी के लावे से निर्मित हुआ था। किन्तु धांगध्रा वढवाण आदि स्थानों में वर्षा अनियमित एवं कम होती है। अभी कुछ समय से ही सौराष्ट्र एवं कच्छ में वर्षा की मात्रा में वृद्धि हुई है। सामान्य रूप से पूरा पाषाणकाल का मानव गुजरात में रहता था तब सभी नदियाँ वर्तमान की तुलना में ज्यादा विशाल पाटों में बहती थी और उसके टीले भी ज्यादा ऊँचे नहीं थे। क्योंकि पुरानी नदियाँ इससे पहले बने हुए समुद्र में से ऊपर की ओर निकले हुए टीलों के ऊपर से बहती थी। ये टीले सामान्य रूप से बह गए। ऐसा अनुमान लगाया जा सकता है कि समय के साथ क्षरण में वृद्धि होती गई और ये नदियाँ और ज्यादा गहरी होती गई।

जंगल एवं प्राणी.

इस काल में गुजरात के ज्यादातर हिस्से में घने जंगल थे। जिनमें बबूल, पीपल, पींपर, वटवृक्ष, जंगली खजूर आदि पेड़ उगते थे। इन जंगलों में तरह-तरह के हिरण, जंगली गाय, भैंस, सीधे लंबे दाँत वाले हाथी और हिंसक प्राणी होते थे। लेकिन गुजरात में एक भी स्थान पर इन प्राणियों के अस्थि.अवशेष प्राप्त नहीं हुए हैं। यद्यपि इन प्राणियों में से कई के अवशेष नर्मदा की घाटी में होशंगाबाद,.नरसिंगपुर क्षेत्र में और महाराष्ट्र में गोदावरी, प्रवरा, घोड, भीमा वगैरह नदियों में मिले हैं। यानी अनुमान लगाया जा सकता है कि ये प्राणी गुजरात में भी उस समय रहते होंगे। यह स्पष्ट रूप से कहा जा सकता है कि इस काल में भूमि प्रदेश अच्छी तरह से हरा-भरा था। इस बात की पुष्टि सौराष्ट्र के दक्षिण.पूर्व में खंभात की खाड़ी में पीरम बेट में अत्यन्त नूतन युग के कितने ही प्राणियों के प्राप्त जीवाश्मों से हो जाती है।

मानव बस्ती की प्रक्रिया.

समय के साथ जब वातावरण स्थिर हुआ और वर्षा का जोर सामान्य हुआ तो गुजरात में सर्वप्रथम इन नदियों के आसपास मानव ने रहना

शुरू किया। इस समय में मानव जंगली अवस्था में ही रहता था और व्यवहार भी जंगली प्राणियों की तरह करता था। कंदमूल एवं शिकार पर ही उसका जीवन निर्भर था। पेड़ की छालए फूलए पत्तियों से अपना शरीर ढ़कता था। शिकार करने एवं कंदमूल को प्राप्त करने के लिये पत्थर के औज़ारों का प्रयोग करता था। पाषाण युग से पूर्व मानवए अस्थि के औज़ारों का प्रयोग करता था इसकी संभावना दिखती है। गुजरात में अव्यवस्थित औज़ार साबरमतीए ओरसंगए भादर एवं भूखी नदीयों में से प्राप्त हुए हैं। गुजरात में नदियाँ जब पहली बार बहने लगी और समय के साथ जलवायु में परिवर्तन के साथ मानव जब इनके तटों पर बसने लगे तब के ये औज़ार हो सकते हैं। अन्य प्रदेशों की अपेक्षा गुजरात के आदिमानव अधिक प्राचीन हो सकते हैं क्योंकिए प्राप्त पाषाण के औज़ार अनघड़ हैं। पुरातत्वीय शोध के अनुसार ये अवशेष दस लाख वर्ष पूर्व के हैं। यानी कि गुजरात की इस जमीन पर मानव बस्ती दस लाख वर्ष पूर्व से स्थाई हो गई थी, ऐसा अनुमान लगाया जा सकता है।

गुजरात का आदिमानव एवं अफ्रिका के बीच संबंध.

सामान्य रूप से गुजरात का आदिमानव अफ्रिका के पूर्वी किनारे से आया होगा, क्योंकि इस महाद्वीप में तीन स्थानों पर और विशेष तौर पर आल्डुंवाई गोर्ज में मानव के और औज़ारों के विकास को वहाँ के बदलते स्तरों के साथ जोड़ कर देखा जा सकता है। विकास की दृष्टि से ये एक आदर्श स्थल हो सकता है। सौराष्ट्र में विशेष तौर पर जामनगर जिले में पींडारा के पास से प्राप्त पाषाण के उपकरणों और कच्छ में नखत्राणा के पास भूखी नदी में से प्राप्त औज़ारों पर से ये संभावना जाहिर की जा सकती है कि जब अफ्रिका और कच्छ.सौराष्ट्र के बीच जमीनी रास्ता या समुद्र तल बहुत ही सामान्य था तब मानव आसानी से भारत में कच्छ.सौराष्ट्र में प्रवेश करता रहा होगा।

गुजरात में मध्यपाषाणयुग.

पुरापाषाणकाल के अंत में जलवायु में परिवर्तन देखने को मिलता है। वर्षा में वृद्धि हुई। इससे पहाड़ों में भी क्षरण हुआ और बड़े-बड़े जीवाश्म नदी के पट में धंस गए। जब वर्षा का जोर कम हुआ तो नदियों के पट पहले की तरह भर गए। लावा से पहले के स्तर ढँक गए। इस समय के मानव के अस्तित्व के प्रमाण देते हुए जीवाश्म अवशेष खेड़ा जिले के महोर नदी के क्षेत्र में मिलते हैं, साथ ही सौराष्ट्र और कच्छ में भी इस प्रकार के प्रमाण प्राप्त हुए हैं। इस प्रकार के अखण्ड टीले कई स्थानों पर यथावत बने रहते हैं। भादर नदी के ऊपर रोजड़ी ;श्रीनाथ गढ़ के आगे और जेतपुर के आगे नहीं तो ये टीले सामान्य रूप से पुराने टीलों के साथ या ऊपर बढ़े हुए नज़र आते हैं। कई बार पुराने टीले पूर्ण रूप से नष्ट प्रायः हो जाते है। इस प्रकार जलवायू की दृष्टि से मध्यपाषाणयुग का अलग ही अस्तित्व जान पड़ता है। लेकिन सबसे अधिक ध्यान आकर्षित करने वाले हैं। इस युग के पाषाण उपकरण पुरापाषाणयुग के पाषाण उपकरणों की अपेक्षा सामान्यतया छोटे और बहुत ही सुघड़ और सुंदर, रंग-बिरंगे पत्थर जैसे कि जैस्पर, चार्ट, अकीक और फ्लिन्ट जैसे खडकों ध्रांगध्रा के पास से एवं दक्षिण गुजरात में अंबिका नदी के पास से प्राप्त हुए हैं।

गुजरात के मानव जीवन में इस समय में कुछेक बदलाव हुए थे। जबकि इनका जीवन अभी भी

जंगली ही था। फिर भी शिकार करने के तरीके में और रहन-सहन में कुछ अंतर हुआ होगा, ऐसा पाषाण के प्राप्त उपकरणों के आधार पर कहा जा सकता है।

गुजरात में इस युग में मुख्य रूप से चमड़े एवं पेड़ों की छाल निकालने के लिये एवं साफ करके घिसने के लिये प्रयुक्त तीन.चार प्रकार के स्क्रेपर्स और छेद करके सिलने आदि कार्य के लिये प्रयुक्त अणीदार औज़ार प्राप्त होते हैं, जो भाले या बाण की नोंक के लिये प्रयुक्त होते रहे होंगे। सामान्य रूप से इनके जीवन में बदलाव आया था। लकड़ी के एवं अस्थि के औज़ार भी इन उपकरणों की मदद से मानव बनाता होगा। समय के साथ मानव ने चमड़े आदि से अपना शरीर ढंकना प्रारम्भ किया। इस प्रकार गुजरात में मानव जीवन का विकास होता रहा होगा ऐसा मध्यपाषाणयुग के विषय में जानने को मिलता है।

अंत्य पाषाणयुगीन गुजरात.

गुजरात में सन् 1947 से पहले कई जगहों से पाषाण उपकरण मिले थे जिनमें प्रमुख हैं समकालीन बड़ौदा राज्य के कड़ी प्रांत में साबरमती नदी के तट के नजदीक, वात्रक के किनारे ओरसंग एवं हीरण नदी के किनारे, नवसारी प्रांत में कीम एवं तापी नदी के किनारे सौराष्ट्र में अमरेली प्रांत में, ओखा मण्डल में वला; वलभीपुर के पास आदि। इन स्थलों पर पाषाण उपकरणों के साथ मृदभाण्ड अवशेष भी मिले थे। इसलिये इसे राबर्ट ब्रुस फूट ने नवपाषाण काल कहा। क्योंकि मानव ने अब जंगली अवस्था में से निकल कर एक स्थान पर रहना शुरू कर दिया था। स्थायी निवास के साथ ही बर्तनों की जरूरत हुई और इस प्रकार मिट्टी के बर्तनों की शुरूआत हुई।

इस प्रकार गुजरात में दो पाषाणयुगों के होने का अनुमान किया गया। प्रथम पाषाण युग की संस्कृति के अवशेष नदी के पुराने पट में मिले थे तो दूसरे पाषाण युग के अवशेष वर्तमान के गुजरात के सतही स्तर पर मिले। इन दोनों के बीच लगभग 61 मीटर का अंतर था। इस प्रकार दो युगों के बीच बहुत बड़ा अंतर रहा होगा ऐसा अनुमान लगाया जा सकता है।

सन् 1941 में गुजरात के प्रागैतिहासिक काल की शोध परियोजना शुरू हुई उसका एक उद्देश्य यह भी रहा था कि वो फुट की इन मान्यताओं की तलाश भी करे। इस उद्देश्य के लिए जहाँ-जहाँ फुट को इस प्रकार के उपकरण प्राप्त हुए थे उन स्थलों में से विजापुर तालुका के हरीपुरा, गढ़डा, पेढामली, फुदेड़ा, मेहसाणा तालुका के मेऊ, मूलसण और आखज, कड़ी तालुका के डांगरवा एवं कैयल, मध्य गुजरात के माही के किनारे जालमपुरा और वासद ओरसंग के किनारे बहादुरपुर वडेली बोडेली एवं हिरण के किनारे श्रीगाम कणबी आदि स्थलों पर इस समूह ने कार्य करना शुरू किया। इनके अलावा उत्तर गुजरात के सीमा विस्तार के खेरालू तालुका में हाडोल एवं उसके आसपास रंगपुर एवं ओटलपुरए उसके अलावा मेहसाणा तालुका में लांघणज सिद्धपुर तालुका में रणछोड़पुरा एवं ओरसंग के किनारे ढोकलिया आदि जैसे नए स्थलों में भी खुदाई की गई।

इसी प्रकार बनास माही एवं नर्मदा के किनारे भी इस प्रकार के औजार मिले हैं। सुरेन्द्रनगर जिले के रंगपुर में इस प्रकार के ज्यामीतीय एवं गैर.ज्यामीतीय आकार के उपकरण प्राप्त हुए हैं।

सूरत जिले में जोखा नवपाषाण युग स्तर के तथा अहमदाबाद जिले के लोथल और जूनागढ़ जिले के प्रभास में ताम्रपाषाणयुग के स्तरों के उपकरण प्राप्त हुए हैं। इस शोध से यह तो सिद्ध हो गया था कि पूरे गुजरात में एक समय ऐसा था जिसमें मानव छोटे अकीक के औजारों का प्रयोग करता रहा। इन हथियारों को लघु पाषाण हथियार के रूप में जाना जाता था।

लांघणज एवं हीरापुर में टीलों पर खुदाई करते हुए सपाटी एवं तीन फूट नीचे तक मिट्टी के ठीकरे मिले हैं, जबकि अकीक के औज़ार, क्वार्टजाईट के औज़ार, इनके अतिरिक्त हज़ारों की संख्या में जीवाश्म जैसे कि प्राणियों के जबड़े, हाथ-पैर, कंधे की हड्डी आदि लगभग सात फूट की गहराई के स्तर से प्राप्त हुए हैं।

इस पर से इतना तो सिद्ध हुआ है कि सतही स्तर पर से और इसके नीचे लगभग दो फूट से प्राप्त मिट्टी की पपड़ीओं से अकीक के औज़ारों का कोई संबंध नहीं है। ये मिट्टी की पपड़ियाँ सतही स्तर पर ही मिली है, इससे ऐसा लगता है कि ये आधुनिक समय की हो सकती हैं। इनकी बनावट वगैरह से भी ऐसा प्रतीत होता है। जो मानव अकीक के उपकरण प्रयोग करता था और उससे अलग-अलग औज़ारों का निर्माण करता था वो नवपाषाणयुग का नहीं किन्तु इससे पहले के समय का होना चाहिये। एक क्वार्टजाईट का गोल बीच में खड्डा पड़ा हुआ पाषाण का उपकरण और दूसरा क्लोराईट शिस्ट का चिकना घिसा हुआ तीक्ष्ण औज़ार जैसे पाषाण से प्रतीत होता है कि ये एक नवीन युग की सभ्यता को इंगित करते हैं। वर्तमान में इसे नूतनपाषाणयुग के नाम से नहीं बल्कि पुरापाषाणयुग में उत्तर पुरापाषाणयुग के नाम से जाना जाता है।

मानव एवं प्राणियों के अवशेष.

इन सभी से महत्वपूर्ण शोध यह है कि छोटे औज़ारों के साथ पूरी तरह घिसी हुई हड्डियाँ मुख्य रूप से प्राणियों के अवशेष एवं मानव के हाडपिंजर प्राप्त हुए हैं। लांघणज में अंधारिया टिले से प्राप्त मानव एवं अन्य प्राणियों के अवशेष मोहेंजोदड़ो के अवशेषों से भी प्राचीन प्रतीत होते हैं। टाटा इंस्टिट्यूट ने कार्बन सी पद्धति के आधार पर इनका समय काल ईसा पूर्व 2500 के आसपास तय किया है।

अंत्य पाषाण युग का मानव.

इस पाषाणयुग का मानव अभी तक जंगली अवस्था में ही रहता था। ये मानव अब एक स्थान पर ही रहने लगा था। ऐसी अवस्था को ब्रेडवुड नामक अमरीकी विद्वान ने इंटेंसिव फूड कलेक्शन स्टेज की संज्ञा दी है।

संक्षेप में मानव ने भोजन के लिये जगह.जगह घूमने की बजाय एक ही स्थान पर रहकर वहीं भोजन की तलाश करना शुरू कर दिया था। टीलों एवं नदियों के किनारों पर ही मानव बस्तियाँ थी। क्योंकि यहाँ पर पानी मिलना आसान था। अभी तक किसी भी प्रकार का घास, पत्तों या डालियों से बने झौपड़े या फिर किसी भी प्रकार के कच्चे मकान के अवशेष लांघणज आदि किसी भी स्थलों की खुदाई में नहीं मिले हैं। ये मानव किस प्रकार यहाँ रहता था इसका ठीक-ठीक अनुमान लगाना कठिन है। लेकिन इतना निश्चित है कि गैंडा नीलगाय, जंगली सुअर, तीन प्रकार के हिरण, गाय, भैंस, बकरा, भेड़ आदि उस समय थे और मानव इनका शिकार करता था, उनको काटता था और अपने टीलों पर ले जा कर रखता था। तालाब के कछुओं का एवं मछलियों का शिकार भी करता था। इनके

अतिरिक्त नेवला, छिपकली एवं चूहों का भी भोजन बनाया जाता था। इतना ही नहीं परन्तु किसी परिजन की मृत्यु के बाद उसके शव के साथ इन जानवरों को मारकर दफना दिया जाता था। इस प्रकार रहने की जगह रसोई और श्मशान एक ही जगह पर रहती थी।

इस समय के जलवायु के विषय में इतना कहा जा सकता है कि वर्षा वर्तमान की अपेक्षा कुछ ज्यादा होती थी। जिससे टीलों के पास वाले तालाबों में हमेशा पानी रहता था एवं नदी किनारे और उसके नजदीक वाले किसी स्थान पर जहाँ उमस ज्यादा होती थीए वहाँ गैंडे जैसे प्राणी विचरण कर सकते थे।

इन मानवों का शास्त्रीय तरीके से अध्ययन दो विद्वानों ने किया है श्रीमती सोफी एरहार्ड एवं केरीनेथ केनेडी। इन दोनों का मानना है कि लांघणज का मानव किस प्रजाति का था ये निश्चित करना मुश्किल है। क्योंकि इनके शारीरिक लक्षणों में लम्बा एवं बड़ा मुंह साधारण ऊँचाई के साथ ऊभरी हुई भौंहे, सहज रूप से उभरा हुआ निचला होठ एवं चपटा नाक ये सिलोन के आदिवासी वेद्रा और भूमध्य समुद्र के आदिवासियों में देखाई देता है। इस प्रकार गुजरात में 4500 वर्ष पूर्व वर्ण संकरता हो चुकी थी।

ये मानव इस कथनानुसार अभी भी पाषाणयुग में ही निवास कर रहा था। क्योंकि ये उत्तर गुजरात में जिस जगह पर रहता था वहाँ टीलों पर सिर्फ लघु.पाषाण उपकरण ही प्राप्त हुए हैं। लेकिन लांघणज, आखज एवं हीरापुर की खुदाई पर से ये कहा जा सकता है कि इस युग के उत्तरार्द्ध में मानव मिट्टी के बर्तन प्रयोग में लाता था। क्योंकि ऊपर के स्तरों में कुछेक जगहों से मिट्टी के टूटे बर्तनों के अवशेष मिले हैं। इन टुकड़ों में बड़े कोठार के बर्तन नहीं दिखते। पत्थर के लघु औजारों के अलावा पत्थर को घिस कर उसमें से औज़ार बनाने की कला, क्वार्टजाईट जैसे कठोर पत्थर को गोल करके इसमें दोनों तरफ छेद करने की कला का विकास उस समय तक हो चुका था। इन छेदों में लकड़ी या हड्डी को डाल कर गदा या अन्य किसी उपयोग की वस्तु बना दी जाती थी। जमीन को जोतने के लिये उस समय जब हल की खोज नहीं हुई थी तब इस प्रकार के औज़ारों का प्रयोग किया जाता थाए आज भी भारत एवं अन्य देशों में इस प्रकार के औज़ारों का प्रयोग किया जाता है।

अंत्य पाषाणयुग.

गुजरात की इस मानव.संस्कृति का काल बिलकुल ठीक तरीके से तय नहीं किया जा सका किन्तु लांघणज में जो लघु पाषाण उपकरण मिले हैं, वो और समुद्र किनारे मिले उपकरण सौराष्ट्र में रंगपुर में सिंधु संस्कृति के स्तरों के नीचे मिले हैं। इसलिये हम ये सामान्य रूप से कह सकते हैं कि लांघणज की अंत्य पाषाणयुग की संस्कृति इससे पहले की तो अवश्य होगी। सामान्य रूप से हम कहते हैं कि लांघणज का पाषाणयुगीन मानव लगभग 5000 वर्षों पहले गुजरात में रहता था। टाटा इंस्टीट्यूट ने कार्बन सी पद्धति से इसका समय काल 4500 वर्ष पूर्व तय किया है।

पुरापाषाणयुग का अंत.

इस युग को अंत्य पाषाणयुग कहा जाता है। लेकिन सच्चे रूप में ये पुरापाषाणयुग का अंतिम स्तर था।

इससे आगे खाद्य.संग्रह एवं निर्वाह.साधनों की विशिष्टता वाला नूतनपाषाण युग शुरू हुआ। पुरापाषाणयुग का पूर्वपुरापाषाणयुग का काल

नूतन जीवमय युग के पूर्वखण्ड का मध्यभाग का एवं मध्यपाषाणयुग का काल इसके अंत्य भाग के समकालीन माना जाता है। जबकि अंत्य पाषाणकाल नूतन जीवमय युग के बाद वाले समय अर्थात आधुनिक समय के आद्य भाग का समकालीन है।

नूतन पाषाणयुग.

नूतन पाषाणयुग की एक विशेषता यह थी कि इस युग में पत्थर के औज़ारों का प्रयोग तो मानव करता तो था किन्तु पहले की तरह नहीं। ब्लेड या धारवाले औज़ार को पत्थर में से इस प्रकार के आकार के ब्लेड निकाल कर बनाया जाता था। मुख्य रूप से धार वाला भाग ही इस प्रकार घिस कर एकदम चिकना चमकने वाला बनाया जाता था। कई बार पूरे ही औज़ार को इस प्रकार से घिस कर सुंदर बनाया जाता था। इस प्रकार घिस कर बनाए गए औज़ारों में कुल्हाड़ी का सुथार प्रयोग करता है। इसमें रंदें में प्रयुक्त तीखा अणीदार पानाए छेणी और हथोड़ा साधारण रूप से देखने मिलता है। उस समय कुल्हाड़ी एवं रंदे के पाने को लकड़ी या हड्डियों के हत्थे में डाला जाता थाए फिर बेल से बांध कर गौंद की तरह के किसी चिकने पदार्थ से अच्छी तरह से बांधा जाता था। इस प्रकार की हत्थे वाली पत्थर की कुल्हाड़ी या रंदे के पाने से मानव पेड़ काटता, लकड़ी चीरता, घिसता, इस प्रकार सुथार का जन्म हुआ।

गुजरात में मिले अवशेष.

इस प्रकार की घिस कर बनाई गई कुल्हाड़ी के पानेए रंदे के पाने और छेणी गुजरात में से कहीं भी नहीं मिले हैं। जो मिले हैं वो गोलए छेदयुक्त बड़े पत्थर हैं। लांघणज की खुदाई में क्वार्टजाईट का पत्थर मिला था। इसके अलावा दो.तीन तापी के तट प्रदेश में से ब्रूस फ्रूट को मिले थे। डांग के क्षेत्र में भी इस प्रकार के पत्थर मिले थे। पत्थर के इस प्रकार के छेददार औज़ारों को लकड़ी के हत्थे में डाल कर कृषि के उपयोग में लिया जाता था।

तापी के तट प्रदेश में या डांग में और अधिक उत्खनन किया जाए तो इस युग से संबंधित और अधिक जानकारी प्राप्त हो सकती है। अभी तो हम इतना ही कह सकते हैं कि उत्तर गुजरात में मानव अंत्यपाषाणयुग से नूतनपाषाणयुग में प्रवेश किया होगा। लेकिन इस नवीन संस्कृति के विकास की कोई निशानी अभी तक नहीं मिली है।

फिर ई. सन् की शुरूआत में वहाँ लोह.युग की शुरूआत हुई तब कच्छ, सौराष्ट्र निम्न.तल के गुजरात के समुद्र तट पर ताम्रपाषाण युग की पूरी तरह विकसित नगर संस्कृति का सिंध में से आकर प्रसार हुआ। इसे एक प्रकार की वसाहत ही कह सकते हैं संस्कृति नहीं। दूसरा मानव अब खेती करके अन्न उत्पादन करने लगा था और अब सभी पशुओं का भोजन के रूप में उपयोग न करते हुए कुछेक पशुओं का पालन करने लगा था। झौपड़ी बना कर एक ही स्थान पर रहने लगा था। मिट्टी के बर्तन बनाना सीख गया था। पहले जंगलों में भटकने वाला मानव अब ग्रामवासी बन गया था। कृषि एवं पशुपालन से उसके जीवन में क्रांतिकारी परिवर्तन आया। इसे प्रथम या नूतनपाषाण क्रांति कही जा सकती है। इस प्रकार नूतन पाषाण युग मानव जीवन के लिये गुजरात में प्रागैतिहासिक संस्कृति की दृष्टि से एक महत्वपूर्ण सौपान था।

संदर्भ ग्रन्थ

1 शास्त्री हरिप्रसाद गंगाप्रसाद, गुजरातनो इतिहासः प्राचीन काल ;प्रथम आवृत्ति, युनिवर्सिटी ग्रन्थ निर्माण बोर्ड, गुजरात राज्य अहमदाबाद 2001

2 पंड्या रामचंद्र नाण, गुजरातनो सांस्कृतिक वारसो ; प्रथम आवृत्ति, अनडा बुक डीपो, अहमदाबाद 1966

3 शास्त्री हरिप्रसाद गंगाप्रसाद, प्राचीन भारत भाग.1, गुजरात युनिवर्सिटीए अहमदाबाद 1984

4 भौमिक स्वर्णकमल एवं जानी मुद्रिका, पाषाणयुगथी ताम्रकांस्य युग ;दूसरी आवृत्ति, नियामक संग्रहालय खातुं, गुजरात राज्य वडोदरा 1995

5 मेहता रण्नाण, पुरावस्तुविद्या, वडोदरा, 1961

6 वाडिया डीन, गुजरातनी भूस्तररचनाए, गुजरात नी कीर्तिगाथा ;दूसरी आवृत्ति, अहमदाबाद 1968

7 सांकलिया हण्धीण, प्रागैतिहासिक गुजरात, गुजरातनी कीर्तिगाथा ;दूसरी आवृत्ति, अहमदाबाद 1968

8 परीख रणछोड एवं शास्त्री हरिप्रसाद, इतिहासनी पूर्व भूमिका, . गुजरातनो राजकीय अने सांस्कृतिक इतिहास ग्रन्थ 1 ;दूसरी आवृत्ति, अहमदाबादए 2004

9 जोत रत्नमणिराव भीन, खंभातनो इतिहास, अहमदाबाद 1935

10 दावे नर्मदाशंकर लाण, गुजरात सर्वसंग्रह, मुंबई 1887

11 शाह चंदुलाल, भूमिप्रकारो गुजरात एक परिचय, भावनगर, 1961

12 शुक्ल शिवशंकर, पहाडो, नदीओ अने यात्राधामो गुजरात एक परिचय, भावनगर 1961

13 सांकलिया हण्धी, सौराष्ट्रनी भूस्तर रचना पथिक व.7, अहमदाबाद 1968

14 वाडिया डीन, गुजरातनी भूस्तर रचना, गुजरातनी कीर्तिगाथा ;दूसरी आवृत्ति, अहमदाबाद, 1968

15 परीख रामलाल; गुजरात एक परिचयए भावनगर 1961

16 दलाल सी.डी., प्राचीन गुर्जन काव्य संग्रह वडोदरा 1920

17 मुंशी कनैयालाल मा. गुजरातनी कीर्तिगाथा ;दूसरी आवृत्ति, अहमदाबादए 1968

18 शास्त्री हरिप्रसाद, गुजरातनो प्राचीन इतिहास, अहमदाबादए 1964

19 संकलियाँ हण्धी, प्रागैतिहासिक गुजरात गुजरातनी कीर्तिगाथा ;दूसरी आवृत्ति अहमदाबाद 1968

20 सान्देसरा भोज, जैन आगम साहित्यमां गुजरात, अहमदाबाद 1952